॥ श्री नृसिंहदिव्यमंगलस्तोत्र ॥



-: रचियता :-

श्री.गुरूमहाराजचरणरज प्रथमेश ,

प्रथमेश निखिल बोराडे,बाणेर,पुणे-४५

मोबा.नं. :-७७२२०२१५५५

श्रीगणेशाय नमः॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीपांडुरंगाय नमः॥

॥श्रीमंगलाचरण ॥

आदिगुरु श्री दत्तात्रेय | सोडवी जो जीवनप्रमेय |
सद्गुरु श्री शिवमय | वामननामे अंगिकारला ||1||
सद्गुरु अध्यात्म-मुर्ती | सद्गुरु चालवी धरती |
सद्गुरुच देई किर्ती | निजकृपामात्रे ||2||
सद्गुरुच सुचवितो | सद्गुरुच लिखवितो |
सद्गुरुच प्रगटवितो | सर्व रचना||3||
कर्ता तोचि निः संशय | कर्म-संसाराचे निरसी भय |
घेउन रुप महाकाय | जाळितो कर्मांना ||4||
त्रिदेवांहून श्रेष्ठ सद्गुरु | जो आहे मोक्षदातारु |
पुरवी सर्व काम्य निर्धारु | अतिसहजजतेने 5||
येई पुण्यपत्तनी भगवान| रुपड़े घेई श्री गुरुवामन |
श्रीवासुदेवाश्रमी विराजून | शक्तिपात करितसे ||6||
असो,तर ही सद्गुरुगाथा | गातो चंडिदास लववूनी माथा|
लिही हे चरित्र तूचि धरुनी हाता | होऊनी श्री सरस्वती||7||
शत ओव्यांचे स्मरण विष्णुंचे | खास श्री नृसिंहदेवतेचे |
श्री प्रल्हाद परमेश्वराचे | पुढे आले आहे की||8||

||पुर्वाख्यान ||

मूळकथेचे करितो निरुपण | ज्यायोगे घडेल विष्णुस्मरण |
का केले श्रीनृसिंहस्वरुप धारण | सर्व शंका मिटतील ||9||
ब्रह्मदेवांचे मानसपुत्र चार | सनक सनंदन सनातन सनत्कुमार |
नाम त्यांची ते असती धर्मागार | परमविष्णुभक्त जे ||10||
चार मुनि वैकुंठी जाय | हट्कले द्वारपाल जय विजय |
म्हणे तुमचे काम काय | कशास्तव आलासी ||11||
ऐसे त्यांसि अडवोनी | असता संतापले चौमुनी |
असुर व्हाल ऐसा शाप देउनी | रुष्टीले चौघेजण ||12||
परि अंती हृदयी द्रवोनी | उःशाप दिला मुनींनी |

म्हणे तीन जन्मांनी | शापमुक्तता लाभेल ||13|
तेव्हा सहोदरी बंधू होऊनी | दितीपुत्र दानवकुळी जन्मूनी |
हिरण्याक्ष हिरण्यकश्यपू नामे धारुनी | उन्मत्त बहु जाहले||14||
हिरण्याक्ष मदमत्त फार | त्रैलोकी उडवी हाहाकार |
विष्णु घेऊन वराह अवतार | उद्धारला तयासी ||15||
विष्णुद्वेषी भावना बाळगूनी | हिरण्यकश्यपू संतापूनी |
सहस्त्रोवर्षे मंदारी तप करूनी | ब्रह्मदेवा प्रसन्न केले ||16||
बोले ब्रह्मदेव,हे दैत्या | संतुष्ट झालो मी आता |
माग वर काय देऊ आता | माग निर्भयतेने||17||
वदे अमरांचा वैरी | ब्रह्मदेवामाझे कैवारी |
कृपा तुमची अवधारी | एक वर मज द्या ||18||
नाही जळी काष्ठी पाषाणी | न पर्वता न शस्त्रांनी |
नोहेच शक्य भुजंगयक्षयक्षिणी | नच प्रतापवान ||19||
दिवसा रात्री पशु न दुर्गा | आत बाहेरी न असुर गंधर्वा |
मानुष अग्नि न देवता स्वर्गा | यांपासोन निर्मृत्य मी असावे ||20||
तथास्तु म्हणे ब्रह्मदेव | बहु भ्यायले देवीदेव |
घेउनी ब्रह्माचे नाव | ब्रह्मलोकी पातले ||21||
इकडे हिरण्यकश्यपूचे कर्म | चालवे नित्य कुकर्म |
बुडवि सदा सृष्टिधर्म | द्वेष-अहंकाराने ||22||
इंद्रादिदेव रूद्र ऋषिगण | त्या असुराचे भय बाळगोन |
पृथ्वीवरी मानुषरुपे धारोन | लपू लागले ||23||
होम बन्द यज्ञ बन्द | त्रैलोकी दानही बन्द |
श्रीविष्णुस्मरणही बन्द | भयशाली त्यामुळे ||24||
आता सब्रह्मा पातले सुरगण | प्रतिनिधी केले उमारमण |
सर्वही होतसे शरण | क्षीरसागर श्रीनिवासाच्या ||25||
श्रीईश्वर करी विष्णुस्तुती | शतनाम भावे गाती |
भगवान योगनिद्रा सोडती | स्वयंभू प्रगटले ||26||
प्रार्थी ईश्वर भो नारायण | हिरण्यकश्यपू वधाकारण |
करि धर्मवचन जागरण | प्रगट व्हावे ||27||

श्री भगवान उत्तरती | दूर होईल जगदापत्ती |
निजात्मशक्ती जन्मा येती | कयाधूचे पोटी ||28||
कयाधू ही असुरकांता | हिच होईल प्रल्हादमाता |
हिरण्यकश्यपू प्रल्हादपिता | दैवयोगाने ||29||
तेव्हा असुर पुत्रपीडा करेल | तेव्हा भक्तरक्षणास्तव अवतरेल |
नरसिंहस्वरूप माझे असेल | अतिमहाउग्र ||30||
ऐसे आश्वासून श्रीभगवान | पुन्हा करि क्षीरसागरी शयन |
देवदेव ही पत्करी स्वस्थान | वाट पाहत राहिले ||31||

|| भक्तप्रल्हादाख्यान ||

काळाने कयाधूसी गर्भ राहिला | दैवयोगे नारदोपदेश ऐकीला |
तिचे पोटी बाळ प्रल्हाद आला | वैष्णवात्मशक्ती ||32||
भगवतभक्त जो परमश्रेष्ठ | विष्णुनामाने सदैव उत्तिष्ठ |
वाटे जग अनित्यदेहीकाष्ठ | अष्टौप्रहरी ||33||
कानी ऐकू येई विष्णुनाम | मनी गुंजे फक्त विष्णुनाम |
वदे जो सदैव विष्णुनाम | अष्टौप्रहरी||34||
सात्विकतत्वाची आदिमुर्ती | आली जरि योगे दैत्यकुळाती |
तरि सुनित्य विष्णुनाम गाती | अष्टौप्रहरी||35||
पटवी जगासी श्रीवैष्णवधारा | वाहवी नारायणामृताचा झरा |
आनंदवी नामगायने गदाधरा | अष्टौप्रहरी||36||
जोडोनी कर उभे देवीदेवगण | तैसेच काही सुज्ञ वैष्णवजण |
दर्शन घ्यावया त्याचे रात्रंदिन | अष्टौप्रहरी ||37||
प्रल्हादतत्व अति श्रेष्ठोदाहरण | नाम घेता होईल दैन्य निवारण|
प्रल्हाद बोले नारायण नारायण | अष्टौप्रहरी ||38||
भाव त्याचा सुमधुर श्रीभगवान | हेचि जगत्पालक हो समुद्रशयन |
केले जरि न पडते भक्तविस्मरण | अष्टौप्रहरी ||39||
नारायणाशिवाय न सुचे गोष्टी | पार केल्या सर्वच व्यष्टीसमष्टी |
भावागार होतसे प्रल्हाद श्रेष्ठी | अष्टौप्रहरी||40||
ऐसी पाहोन परमशत्रूची भक्ती | करि स्वता:चा पुत्र बघुन चिडती |
तो हिरण्यकश्यपू बहु क्रोधावती | दिवसेंदिवस||41||

करु लागला मग पुत्रपीडा नित्य | प्रल्हादा रक्षि विष्णु करि अगत्य |
न पडे तद खंड नामस्मरणे सत्य | कोणत्याही प्रसंगी||42||
क्रूरसर्प सोडता गरूडराज होई | समुद्री बुडविता अलगद तरंगवी |
कड्यावरोन ढकलता स्वये झेली | श्रीनारायण ||43||
अलौकिक श्री भगवानलीला | अनुभवा येई भक्तप्रल्हादबाळा |
नित्यसनातन श्रीमद घननीळा | रक्षि अंत:बाहेरी||44||
||अवतरणाख्यान ||
आता संतापला हिरण्यकश्यपू | म्हणे प्रगटेल का रे माझा रिपू |
या खांबातूनी तुज रक्षण्या बघू | सामर्थ्य त्याचे ||45||
प्रल्हाद उत्तरे विष्णु सर्वव्यापक | पिंडब्रह्मांड न त्यांवाचूनी वंचक |
प्रत्येक जड श्रीविष्णुतत्वधारक | नि:संशयतेने ||46||
करिता झाला असुर लत्ताप्रहार | त्याक्षणा आधि श्रीदामोदर |
कडकडोनि हो आवाज करोन | स्तंभ तुटला ||47||
तदक्षणी झाला प्रचंड आवाज | तो स्तंभ तोडोनि प्रसवले ओज |
नरसिंहस्वरुपि आला अधोक्षज | सुष्टासी संरक्षण्या ||48||
त्या आवाजे थरथरली क्षिती | त्याओजे धरणीधर घाबरिती |
त्रिदेवांची कुंठीत झाली मती | या प्रसंगकारणे ||49||
त्या नृसिंहाची दिव्य तेजप्रभा | व्यापोनी गेली जगाची आभा |
ब्रह्माण्ड दिपले हिरण्यगर्भा | त्या तेजोमयाने ||50||
पुष्ट शरीर अन आर्यओजकांती | सिंहमुखी होऊनी भयस्वर गर्जती |
महालक्ष्मी त्यारुपा बहु घाबरती | अक्राळविक्राळ| तो |51||
उचलूनी हिरण्यकश्यपूस त्वरित | घेऊन भगवान असुरधड क्रोधित |
बसोन उंबरठ्यावरी नखाने पतित | भेदले शरीर उग्ररुपे ||52||
मग हो एक अलौकिक घडले | असुरात्मतेज श्रींमध्ये मिसळले |
त्याचे विलीन वैकुंठास जाहले | अलौकिक लीला जी ||53||
विश्व झाले भयमुक्त या घटनेमुळे | काळही थांबला होता हो या वेळे |
चक्र सुरु जाहले धरतीचे सुकाळे | भगवानचि सर्वकर्ता ||54||
सिंहासम गर्जना करे नरसिंह खास | अत्युग्र तेज असहय झाले धरतीस |
देवदेवासह सुज्ञभक्तलोक शरणास | नृसिंहांच्या लागले ||55||

परि अत्युग्र तेज नच शांत होई | लक्ष्मीसह देवीदेव विनंती करी |
नानाप्रकारे त्यास्वरुप रिझववी | तरिही नाही शान्त ||56||
||प्रेमाख्यान||
तेव्हा भक्तप्रल्हाद सामोरी येई | आर्तभावे नारायण स्मरण करी |
भो परमेश्वरा भो नरसिंहो म्हणी | अखंडित||57||
अत्युग्ररुपड़े सोडोन वत्सल होई | भयंकर सिंहासम गुरगुर थांबवी |
शेपटीने प्रल्हादा मांडीवर बसवी | वात्स्यल्याने नरसिंह ||58||
आपल्या जीभेने त्याचे लाड करी | श्रीहृदयासी अतिप्रेमे लावूनी धरी |
अद्वैतस्वरुप भक्तप्रल्हादा दाखवी | श्रीनरसिंह ||59||
अशी नरसिंहकथा प्रसिद्ध थोर | परम भक्तासाठी घेतसे अवतार |
त्यायोगे होतसे जगाचाही उद्धार | श्रीविष्णुकृपालीला ||60||
आता महाराज शांत जाहले | प्रेमे सर्वांभक्ता जवळी केले |
प्रल्हादप्रेमास्तव धरणीवर आले | नरसिंहस्वरुपात ||61||
||दत्ताख्यान ||
दैत्यरुधिरविषे हो नखांची आग | अस्वस्थ फार त्यामुळे भगवान |
त्यावरी लक्ष्मी करे उपाय खास | आणिली दिव्य फळे ||62||
दिव्यफळे होती औदुंबरवृक्षाची | त्यांत रुतवली नखे नरसिंहाची |
विष उतरे फळात क्षणमात्रेचि | अतिसत्वर हो ||63||
नरसिंह झाले प्रसन्न औदुंबरासी | म्हणती आमचे सानिध्य तुजसी
|जे करी तुझि पुजा हर रोजासी | ती आम्हा पोहचेल ||64||
लक्ष्मी वर देई औदुंबरासी | सदा फलीत हो निर्धारेसी |
कृपावंत तू सद्भक्तजनांसी | कल्पवृक्ष होसी बा ||65||
हेचि दत्तसंप्रदायाचे मूळनिधान | श्रीगुरुरुपी दत्तात्रेयांचे अवतरण |
श्रीमन्नृसिंहसरस्वती नाम धारण | कलियुगी घेतसे ||66||
भक्तांस्तव होई नृसिंह अतिसौम्य | सद्गुरुरुपी होउन दाखवी अगम्य |
पुरवीतसे सर्व सद्भक्तांची काम्य |नृसिंहसरस्वती होऊन ||67||
नृसिंह आले नरसिंहभान होऊन |अक्कलकोटवासी स्वामी समर्थ |
असशी कोमल परि भासी उग्रन |हा नृसिंहावतार ||68||
श्रीगुरू नृसिंहस्वरुपाचा अवतार | राहे श्रीवासुदेवनिवासी पुण्यनगर |

झाले अतिअतिसौम्य शक्तिदातार | श्रीवामन गुळवणी वेधगुरु ||69|
|ऐसी ही नृसिंहभगवानावतार कथा | जो वाचेल श्रद्धाभावे लवुनी माथा |
त्यासी श्रीगुरूदत्तात्रेयस्वामी कृपा | सदा लाभेल ||70||

||स्वरुपाख्यान ||

आता ऐका नरसिंहांचे अनोखेरुप | स्वरुप नामे वर्णीतो जी वारी पाप |
विविधांगी स्वरुपे जी वाटेल अप्रुप | वाचता ||71||
कुंदपाद कोप दिव्य ब्रम्हांड समुद्र | विश्वरुप वीर क्रूर बिभित्स ध्रुम रौद्र |
वन्ही व्याघ्र बिडाल भीम पाताळ | आकाश वक्र चक्र शंख सत्व वेग ||72||
अदभूत विदारण योगानंद लक्ष्मी | भद्र राज वल्लभ श्रीपादवल्लभ |
श्री नरसिंहसरस्वती नरसिंहभान | आणि तेहितिसावे श्रीगुरु वामन ||73||
ऐशी विविध स्वरुपे भगवानांची | पतितपावन करणार्या विष्णुंची |
महादयाळू श्रीगुरुनरहरिरायांची | अतिपवित्र जी ||74||
ऐसे हे चरित्र नरसिंह अवताराचे | अलौकिक अदभूत वात्सल्याचे |
दुष्टखंडण आणि हो सुष्टरक्षकाचे | भगवान महाविष्णु ||75||

|| नामसंकिर्तनाख्यान ||

आता करूया हरिनामसंकिर्तन | श्री भगवंतांचे पवित्रनामस्मरण |
ज्याचेनी जाती नरनारी उद्धरुन | चला गाऊया आनंदे ||76||
जयजयाजी केशवा माधवा | जयजयाजी नारायणा कृष्णा |
जयजयाजी गोविन्दा उपेंद्रा | संकर्षणा तुज नमो ||77||
जयजयाजी वासुदेवा प्रद्यूम्ना | जयजयाजी श्रीधरा दामोदरा |
जयजयाजी जनार्दना वामना | अधोक्षजा तुज नमो ||78||
जयजयाजी त्रिविक्रमा अच्युता | जयजयाजी अनिरुद्धा नरसिंहा |
जयजयाजी श्रीहरी ऋषिकेशा | श्रीकृष्णा तुज नमो ||79||
जयजयाजी पुरुषोत्तमा | जयजयाजी मधुसुदना |
जयजयाजी श्रीविष्णो | नरसिंहा तुज नमो ||80||

|| स्थानाख्यान ||

नृसिंह मूळप्रकट स्थान | प्रल्हादपुरी मूलस्थान |
सिंधदेशी आता मुलतान | म्हणताती स्थळाला ||81||
सिंधप्रदेशी चिनाबतीरी | तेथील स्तंभातूनी येती |

साक्षात प्रत्यक्ष रमापती | प्रल्हादभक्तास्तव ||82||
अनेक पावन स्थानांची ख्याती | भरतखंडात प्रसिद्ध असती |
नृसिंहदेवतेची महत्कीर्ती | पतितपावन ||83||
द्राविडदेशी तेलंगणआंध्र प्रांती | काही स्थाने विख्यात असती |
भद्राचलम अन सिंहाचलम म्हणती | त्या तीर्थांना ||84||
तसेच ऐहोबीळ अन पेन्नार ऐहोबीळ | स्थाने असती महाबळ |
लक्ष्मीसह नृसिंहदेव कृपाळ | तेथेही राहती ||85||
कर्नाटकप्रांती योगनृसिंह राहती | लक्ष्मीनृसिंह मंगलगिरिवरती |
करुणावंत महाप्रतापी नृपती | पूजति महत्भावाने ||86||
बिदरक्षेत्री झरणी गुहेत | उग्रनृसिंह प्रगटत |
बहुकष्टे भाविक समस्त | दर्शन घेई त्याचे ||87||
माहाराष्ट्रदेशी नीरातीरी | गुप्तगुहेत नरसिंहाची वसती |
भक्तवत्सल लक्ष्मिपति | भक्ताभिमानी देवता ||88||
पुण्यनगरीत एक स्थान | जे काळाकोरमपुर्यात |
सदाशिवपेठेत खास | लक्ष्मीनृसिंह वास करि ||90||
जोशी उपनामिक पुजारी | पूर्वज गणेशपंत भारी |
त्यांसि मुर्ती संगमरवरी | काशीक्षेत्री मिळाली ||91||
पेशवाई पुण्यात स्थापना | श्रींची नैमित्तिक उपासना |
तसेच अनेक आश्चर्ये जाणा | आहेत तेथे ||92||
मुलस्थानस्तंभाची प्रतिकृती | त्यातळी एक गोष्ट वसती |
मूलस्थानाची मृत्तिका असती | बावनकशी भक्तीची ||93||
आजही जोशीजन पुजा करिती | नरसिंहलक्ष्मी सदैव संतुष्टी |
महत्कृपा भक्ता करिती | प्रेमभाव ओवाळुनि ||94||
ऐशी नृसिंहस्थानांची ख्याती | दर्शन घेउन अनुभवा अनुभूती |
नरसिंहमाई प्रेमप्रदात्री | तुम्हालागीं जाणवेल ||95||

|| उत्तराख्यान ||

अपरिमित शक्ती या नृसिंहाची | तसेच त्याच्या चरित्राची |
आणि नाम संकिर्तनाची | अलौकिक नामप्रभा ||96||
श्री नरसिंह प्रत्यक्ष परमेश्वर | प्रत्यक्ष शक्तिचा दातार |

श्री दाता महालक्ष्मीवर | श्रीमहाविष्णु अवतारी ||97||
वर्णीलेली सर्व सत्कथा | गुरुचि लिखवि धरून हाता |
चंडिदास नमितो माथा | श्रीसद्गुरुचरणी ||98||
नरसिंह हा दयाघन | जरि वाटे भयवान |
अत्युग्र तेज महान | त्यामाजी वसतसे ||99||
ऐका मौज त्याची खरी | जर ठेविले स्मरण भवसंसारी |
प्रेमभावनेने आळविला नरहरि | कृपा करेल हो ||100||
अवतार हा सुष्टरक्षक | तसेच हो दुष्टभंजक |
श्रीनरहरि भवतारक | सनातनी सर्वात्मा ||101||
साद घालिता नरहरिला | धावेल नक्की भक्ताहाकेला |
प्रसवून दिव्य ज्वाला | हरण करेल संकटाचे ||102||
भो नरसिंहा आळविता | सत्संग देईल जगत्राता |
सद्गुरुशरण्यभाव घेता | उद्धार करेल ||103||
नरहरि नरहरि बोलू सदा | मिटेल जन्मांतरिची आपदा |
मिळेल खरी सत्संपदा | नरहरिकृपेने ||104||
आता विनंती नरहरिपदाला | गोड मानूनी घे कवनाला |
पात्र करि तव कृपेला | श्रीनरहरिराया दयाघना ||105||
एकशे आठ ओव्यांचे नमन | श्री नरसिंहांचे चरित्रगान |
ज्यायोगे घडेल आत्मस्मरण | सोहमभावाचे ||106||
संध्यासमयी नियतवारी | श्रद्धायुक्त पठण करिती |
चित्त प्रसन्न पाठांतरी | अभयदानी श्यामराज ||107||
हा श्रीनृसिंहकृपाप्रसाद | प्रगटवे गुरुवामन खास |
भयहारी हे स्तोत्र खास | घ्या प्रचिती अनुभवे ||108||

|| श्रीभगवाननृसिंहदत्तार्पणमस्तु ||

|| सुचविते लिखविते सद्गुरुच ||

॥ श्रीनृसिंहशामराजाची आरती ॥

जयदेव जयदेव जय नरसिंह दयासिंधो ।
श्रीनरहरि प्रिय हा मज प्रल्हादासम साधो ॥धृ॥

प्रल्हादभाव राखण्या अवतार झाला ।
स्तंभोद्भव करूनिया नरसिंह प्रकटला ।
तारि तारि ह्मणता असुरा निर्दळिला ।
भक्ति-प्रेम-कृपेचा प्रताप प्रस्थापिला ॥१॥

रमा ही स्तब्धे पाहोनि रूप हे भयशाली ।
प्रल्हाद विनवी घ्यावे शांतरूप वनमाली ।
प्रल्हादास्तव उग्ररूपाची उग्रता सोडली ।
अवतरूनि भूवरि श्रींची ख्याती जाहली ॥२॥

दैत्यमांसरूधिराने नखां जाहली त्रस्तता ।
औदुंबरफळां रूतवुनि मिळाली स्वस्थता ।
कटीसंधी श्रीलक्ष्मीसह औदुंबरी सफलता ।
चंडिदासा स्वस्थवि नृसिंहपदीं मनोहरता ॥३॥